KK (32)

"वर्तमान परिदृश्य में स्वामी विवेकानन्द के शिक्षा सम्बन्धी विचारों की प्रासंगिकता"

डॉ. किशोर कुमार
असि. प्रो. इतिहास विभाग
कु.मा.रा.म.स्ना.महा. बादलपुर

पुनरुत्थित भारत के निर्माण का सर्वाधिक शक्तिशाली माध्यम शिक्षा है। शिक्षा हमारी सुप्त चेतना को जागृत करने, समाज में स्थापित तर्क रहित धारणाओं से मुक्त कर औचित्यपूर्ण तथ्यों को स्थापित करने और सर्वाधिक महत्वपूर्ण हमारे एकान्तिक दृष्टिकोण को व्यापकता की ओर अग्रसर करती है। वर्तमान विकासोन्मुख भारत के उत्तर आधुनिक समाज को समरसता, तार्किकता, सहिष्णुता, वैज्ञानिक अभिरूचि के साथ-साथ औचित्यपूर्ण विचार मंथन की आवश्यकता है। आर्थिक, सामाजिक, वैज्ञानिक, राजनीतिक, शैक्षिक इत्यादि समस्त पक्षों पर होने वाली राष्ट्र की उन्नति की सार्थकता नैतिकता एवं सावयविक वातावरण के अभाव में अर्थहीन है।

यह एक वैश्विक सत्य है कि किसी भी समाज की प्रगति उस समाज के व्यक्तियों की विचार-शक्ति, उनकी तार्किक क्षमता, वैज्ञानिक अभिरूचि एवं औचित्य की अवधारणा पर निर्भर करती है, जो आधुनिक समाज के निर्माण की आधार शिला है किन्तु सूक्ष्मता से अवलोकन करने पर हमारा वर्तमान उत्तर आधुनिक सामाज आज भी राष्ट्र की विभिन्न चुनौतियों, विचारधाराओं, मान्यताओं एवं दर्शनों आदि को तर्करहित अवधारणाओं पर आधारित पूर्वाग्रहों से ग्रस्त अभिव्यक्ति प्रदान करता है जबकि किसी विषय, मुद्दे, दर्शन एवं मान्यता पर संकीर्ण विचारधारा के आधार पर तर्क रहित होकर निष्कर्ष प्राप्त कर लेना अकादमिक जगत् एवं जनसामान्य, दोनों के लिए ही अहितकारी परिदृश्य है। जो हमारी वास्तविक उन्नति का मार्ग अवरूद्ध कर देता है।

महान व्यक्तियों का दर्शन, जीवन के प्रति उनकी संकल्पना और

 ISBN : 978-93 80216-12-6

Scanned by CamScanner